

आशा सरकाथि

2673

ASHA ARCHIVES

आशा सरकाथि

2673

ASHA ARCHIVES

२७मी

ॐ काराये अमल वगारा हिं ॐ त्या ना वं
धयो त्या हा जाप १००० । १०००

ॐ नमः श्री वज्र सत्वास । ॐ नमः श्री च
राद महारोषराय । ॐ नमः श्री गुरु आ
रा । ॐ नमः श्री चराद महारोषरा आरा ।
॥ ॐ चराद महारोषरा सर्व माया निदेशाय
निर्विघ्न हूँ फट् ॥ थन जाप ३ यास्यं व्या

नयाय नमस्करन समस्तं याय ॥ ॥
ॐ श्री भगवन् कृष्ण चल सिद्धिं देहि हूं
फट् ॥ ध्या ७ प्रपा सि हल स च न पु या ति त
सा सर्व सिद्धि दयु सर्व लोक वस्य जु यु ॥ ॥
भावना ॥ भावयेद्विष्व पद्म स्थ खड्ग पास

धर भुजौ ॥ नयोर्या लिंगित व्याघात द्वेष
वज्रा स्वरूप त ॥ खड्गा व्याघ्र ग्र करं स व्य वा
म पास समान्वितं ॥ तर्जान्या तर्ज र्कं च
दंता श्रुति न पि ढरं ॥ संप्रहार पदं स व्य च
तुर्मोर विमर्दन ॥ वामे भ्रू म्पां श्रु जानुं च

केकरासंभयानकं ॥ वसुधातर्जसकं
चवामजानुग्रतस्थितं ॥ अक्षभ्यक्त
तमौलांगः नीलरत्नाकिरीतिनु ॥
पंचचीरंकुमारंचसर्वालंकारभूषितं
॥ ॥ दिरष्टवर्षाकारंचरक्तचक्षुदयंवि

भू ॥ भावयेत्स्थीरचित्तेनसिद्धोहंचराद
रोषरां ॥ एवंभूतांथीचरादरोषरांभा
वयत् ॥ धनपुष्पंन्यास ॥ ॐथीचरादम
हारोषरासकलपरिवारसहितआगच्छ
जःहूँवंहो ॥ अत्रमरादलेआदिस्थीनंकु

रुहं फट् ॥ ॥ ॐ कृष्णा-चल वज्र पुष्पं
प्रतिदृष्ट्वा हा ॥ मध्ये ॥ ॐ श्वेता-चल वज्र पु
ष्पं प्रतिदृष्ट्वा हा ॥ पूर्व ॥ ॥ ॐ पीता
चल वज्र पुष्पं प्रतिदृष्ट्वा हा ॥ दक्षि ॥
ॐ रक्ता-चल वज्र पुष्पं प्रतिदृष्ट्वा हा ॥

पश्चि ॥ ॐ श्यामा-चल वज्र पुष्पं प्रतिदृष्ट्वा हा ॥ उत्तरे ॥ ॥ ॐ वैश्व-वज्री वज्र पुष्पं
प्रतिदृष्ट्वा हा ॥ मध्य ॥ ॥ ॐ मोहव
ज्री वज्र पुष्पं प्रतिदृष्ट्वा हा ॥ आग्ने ॥
॥ ॐ पिञ्जन वज्री वज्र पुष्पं प्रतिदृष्ट्वा हा ॥

हा ॥ नैऋत ॥ ॐ रागवज्री वज्रप्रव्या प्रतिद हूँ फ
दस्वा हा ॥ वायुवे ॥ ॥ ॐ ईश्या वज्री वज्रप्र
व्या प्रतिद हूँ फदस्वा हा ॥ ईशाने ॥ ॥ ॥
प्रव्या चूपतथादी पंगंधने व्यदमे वच ॥ ॥ ॥
जा पंचोपचारे राकुर्या दे मरादलस्य हि ॥

यदा भेता चलो मध्ये मोहवज्री समान्वित ॥
तस्यैव मरादलं ज्ञेयमवपीता चलादिकं ॥
पंचयोगिनी प्रभेदेन पंचमरादलकल्पनं
॥ कुर्यादेकाग्रचित्तेन पूर्वसेवा कृतसम ॥
मरादलं परिवर्तय वज्रयोगिनी योगस ॥

उत्तं भायत्तममं सैश्च वर्तये चं मुहुर्मुहुः ॥
॥ ॐ आः सर्वतथागताभिषेकसमय
श्रीयेहं ॥ मकुटाभिषेक ॥ ॐ चराडमहा
रोषराः आ विंशतिरस्य हृदयहं फट् ॥
थं न जापयाये ॥ ॐ हनरमारय र सर्वश

तु न जानरवद्राभिषेक ॥ ॐ गृह २ कहस
र्वदुष्टान् पाशेन वन्ध २ महासात्यते चर्म
त्ये स्वाहा ॥ पासाभिषेक ॥ ॐ हेशी भगव
न कुष्मा चलसिद्धिः त्वं हं फट् ॥ ॥ तत्तत्पू
र्ववत् आभिर्बिं चैत् ॥ सर्वसाध्यस्य कुष्मा

दिवर्णा भेदेन पञ्चावलानाम्नाभिषेकोदय ॥
थुलि पंचाभिषेक ॥ ॐ भगतिः आविशर
अस्माहृदयहूँ फल देवी आवाहन जाप ॥
ॐ कर्त्तृ के सर्व माराणां मांसः कर्त्तृ य २ हूँ
फट् ॥ कर्त्तृ उत्पत्ति ॥ ॐ वज्र कपाल सर्वस

चुनारक्तः धारय २ हूँ फट् ॥ पाच उत्पत्ति ॥
ॐ हेशी देव वज्री सिद्धि त्वं हूँ फट् ॐ हेशी
भगवन् कृष्ण चल मम सिद्धि देहि मे हूँ फ
ट् ॥ ॐ मंचवो नाव सिद्ध लतिये सिद्धि ५
॥ ॐ हेशी देव वज्री मम सिद्धि त्वंः शत्रुक्ष

यवस्यं कुरु हूँ कट् ॥ थं मंत्र सि हल ज पा
व्रं चाल १०८ न शत्रु मोहन जु यु थ न सिद्धि
दय ॥ थन यथा सक्त पुजा ॥ आकर्ष रा पुष्पा
दि पुजाः पंलां धेंः स्तुति ॥ वलि विय मंत्र ॥
ॐ चं राद म हारोष राः आग छ रई मं वलिः

गृह २ मम सिद्धि देहि मे शत्रुः निवारय र हूँ
फट् ॥ थन स्तोत्र याय ॥ ॥ खड्ग शो
धन याय ॥ हा पां खड्ग पंच ग वन सिले ना
ना सुगंध न लेपन याय ॥ ला हात हा जल
पं खड्ग कायः ह्रीं ३ पोल जा पयाय खड्ग क

याः चतुर्दशसिखुहु निस्यंलाधितजामेः पू
रा मासी अनु पुजाया यखड्ग सिद्धि जु यु ॥
मंत्र ॥ ॐ चराद महारोष राः आग
दं २ खड्ग सिद्धि हूँ फट् ॥ ॥ ॐ चराद
महारोष न हूँ फट् ॥ मूल मंत्र ॥ ॐ अ

चल हूँ फट् ॥ दुतिय मूल मंत्र ॥ ॐ हूँ
फट् ॥ तृतीय मूल मंत्र ॥ हूँ ॥ हृदय मूल
मंत्र ॥ हौं ॥ दुतिय हृदय मंत्र ॥ हूँ ॥
हृदयो मंत्र ॥ ॥ अथ योगिनी
मंत्र ॥ ॐ वज्र योगिनी हूँ फट् ॥ मूल

मंत्र ॥ ॐ प्रज्ञा पारमि ते हूँ फट् ॥ दुति
यमूलमंत्रः ॥ ॐ वौ हेरी ये हूँ फट् ॥
नृति यमूमंत्र ॥ दको सा च न या य र व
दु या ये जु लो ॥ यु गु क थं व ज्र च क शु ल
पाश व र ध व ज पु स्त क पंच वा जा सा

च न या उ थं ॥ जं व र आ दि द य के लं जु ल ॥
प्रे त वा ल ॥ म नु ष्य म च फे सि ॥ ग रो श कि सि
या द न्त ॥ पि शा च या त सा वा त सि ॥ दा कि नी
या त गौ रि चौ री च या पो ल नं ॥ रो म का म न दे व
वे त ल स म ल या त म नु ष्य या को चं ॥ वा सु कि

आदिनागयात्रा वंगलसि ॥ राजाआदि ॥
देवदाथसि ॥ हारतिआदिअब्बेस्वांसि ॥
देविआदिंदयकेउरसि ॥ गन्धर्वदत्तगुरु
दयाहिः कुमिचायाचा ॥ देवादिदेवदाथसि ॥
राक्षसश्मशानयानौथुलिदकोसाधनायाये

खड्गयाथेंजुल ॥ ॥ ॐ चराद
महा रोषराः आगच्छेदरअमुकमेसाधय
हैं फट् ॥ गुगुदयकेजुलोउगुयानामकायमा
लो ॥ सर्वपापनासेयति ॥ थुलितजापया
यपापनाशजुथु ॥ रक्षरमं ॥ थुलितनांस

वभयनाशजुयु ॥ डाकिनीया मय वयु वेले
ईका मकाः म्वाः मास ध्या १०८ ज पा पे गु डि ग सं
होले ॥ सर्व डाकिनी नों ता डय २ ॥ थुलितना
होलेः डाकिनी वी स्य वन्यु ॥ वाला नोंः रक्ष २ ॥
थुलितना वो हल स पु य रक्षा जु यु ॥ देव दत्त उ

ध्या टय २ थुलितनाः इम शानयानोः ज पा गु ल
आ लु धा दु ने होला होय उ स्या त उ ध्या त न जु
य ॥ अ मु क रोगं नाशयतिः भु लितना ह
सरवा पांगा लेः सर्व रोग नासः ॥ देव दत्त स्यः वि
पं नाशय २ थुलितनाः थको स पु य य स ला वे ॥

आशा भट्टवाचि

2673

ASHA ARCHIVES

आर्य समाज

2673

ASHA ARCHIVES

गुह्यवस्त्रयायमालङ्घ्याप्रतिमा चोद्येऽप्यनु
तिष्ठेते देवां जापयाये ॥ अमुकदेवसमान ॥
युतिना जापयायवस्त्रजुयु ॥ पृथ्वीं मे क्रुत ॥
युतिना जापयाये च न मुने ह्यु ॥ सर्वज्यै
रं नाशाय २ युतिना जं च विद्येः रश्मा विद्येः

स्वरनाशजुयु ॥ हरतालः मनसिल गोलो
चन ईतालसाल्यं महानिफये अजलनं
लेलिय ॥ लोकनां मुखं चक्षुः वन्धय २ युति
नावावावने मेवन रवन्मुमशुः सिंहलनंति
सालोकवस्त्रजुयु ॥ ॥ नागकेशरसि ॥

नागराजांसाधय ॥ युतिनालखसप्रये
कोस्वसे आकाससखये ॥ हन २ अनन्नाशि
ध्रं वर्षा पय २ ति ॥ अतनाजपेवागाय ॥ सर्व
वातवृष्टि संभय २ ॥ अलिना आकासश
कोठनस्वस्यं प्रये वाफसदियु ॥ ॥

प्रथममालामेचनं केतकिस्वानया हलस
चोस्यं हाऊ कां चिय सिरसजुसां लपतिजु
सां गपतस जुकोवाय समसाज्वरनाशजुयु ॥
॥

रूप पसे को फूफने:

ऊँ वायु विस्म भस्म तेज हुँ फूटू: यो मंच लेज
स्को रूप पस्प को धू: सके भर माने सलाई नै फू
को दिनु: के हो कार न ले मानी सधै न भने: ना
उमाच सो हो ले ई नाउ भुई माले थि ७ फेरा फू
की: मोति ७ फेरा फू की दिनु जस्को रूप पस्प को धू

तेस्को घर माने को हुँ धू ॥ ॥ ॥

केस कालो हुन्या:

संघ भस्म तोला १ सिसा भस्म तोला १ ध्यउ तो १
याति धोति चन्दन जलो गरी केस माला उनाले भ
मर जसो कालो हुँ धू ॥ ॥

आपका फूरे १ वरौ १ अमला १ हरौ १
अर्जुन वृक्ष कोवो का १ काचोई न्द्राईनी १
याते वरावर राखी पीची तेल का तेल मा मिला
ई पका डनु सिद्ध भया पाछे तेल तेल कहं लाउ
धे यो तेल के समाले पना गंजु र कैलो के सपनी

कालोई धे से पे त द प्वा थु वा डनु कालोई धे ॥
जुवाजित्ने मोह निपानिई धे ॥
औं राइ सिद्धि वज्र योगिनी अकास चार
नी असुर वस मानाय औं ह्रीं स्वाहा जप १०००
गरे पाछे मिधई धे ॥ रातो कालो तिका वना

ई लाउनु सो।ति कामाउ फेरा फुकी लाउनुः
 फेरि खेतर दामा कौरी मा फुकी दिनु हा नद खेर प
 हि हानु ॥ गोहि हद मो। हनी गर्नु व-यो भा
 ने। ने ज हद लाई हाने दिनु ॥ ॥

भगवति को थान मा:

अँ कालि करालि विषरारि वगला मुषि
 सर्व दुष्टानां वाचं अमुकि नामे मुखं प
 देस मयः जिह्वा किल य २ बु। चिना सय २
 ओँ हिं स्वाहा ५५६००० ममान मागई ल्याहा
 को गोर्लि पाला माले विः ल्यो ग्वल फेकी

पाला मा नाम लेखने काई दाः राम का हा ई
 रानु को व र्मः

आउनुः आफनु घरमा आई लोपालाउ
लान्पारी पुजागर्नुः सोपुजागरिसकेप
दिः ननागने थाउमा द्यो प्यो पारी पुजा
गर्नुः राखी दिनु दिनु कोपुजागरिराखनु
राजारानि। स्थि ईला मित्र हृदय ल्यई धः पु

जागर्ने सरसाम् मासु मतमासु
अहुवा २२ रगसी राखी पुजागर्नु
जपगर्नुलाई लोपाला द्यो प्यो आई आ
फुले हो मले द्यो पिजपगर्नुः पालामा
हुई जाना कोना मामिलाई लेखनु ॥ जपसके

यकै दिन मागर्नुः सकेन भने रा दिन मा लि
 व्याय पनी रुं छ ॥ ॥ ॥



यो जैव पंचो पचार मा
 ईको पुजा गर्नु आले वो
 को चलाठनुः सो हिवो

काकोर गलले लेखनुः यो जैवः गोलो चनले ना
 मरुप कपरा माले वी गादनुः घर आवसः म

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं : जपमंत्र ॐ ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं : अमुकि शिष्टं आगच्छ आगच्छ आग
च्छ १५०० जपनु ॥ ॥ ॥

श्रीरत्नादेवियानपिंड द्वायेगुः॥

ॐ सर्वतथागत अवलोकितैः स
म्बररुद्रैः ॥ ५१५०० च पायापिन्द

कुचुंरुषेलने
ॐ नमो स्वाहा ॐ हूं नमो हूं हूं स्वाहा
र १०८ ॥ सानि चर वार मंगलवार
चतुरदसि तिहु स्यात्

ॐ सधमाहनाः सधमोहनी ईश्वरमाहा
देवगौरापावति कीवाचा ॐ गुरुकीवाचा
जप १०८ चार २१ आधे १०८ ले परदेयकर
आधेले पुजागर्नु सो पुजागर्नु को आधे ८
ली सो ही आई माई लाई हा मे दिनुः ॥ ॥

८५१ के

ॐ नमो सिधो गुरु आशा ॐ नमो नमो नमो
त्वा हो जप १००० चार २१ चार दोवा नमो वां
१०८ जादि फलानाः फलाना को विरोध हो नमो
नीः चामल अलीकति ८१ पै सा ८१ श्रीः रुफेरा
मा गोलीनु चामल मापनी पहरीति

कलफलनेथाडमापनीयहीरित
मलाममापनीयहिरितगलीलीनु
योजम्यागतिगनेसथानमालगी
यकआसन।। श्री गोकुलधुपगोमलाईदिनु
पुजागर्नु जमगर्नु १००० जमिलकेपादि गनेल
था
नकेपातो इकेराली जम्मायकेथाडमाल

श्री गौ १ सिचा १ गोकुलधुप १
योमिलाईकारि योधुप।। श्रीजगदुनु अ।। प
नी।। धनु फलाना। फलानाकोची तफारीजो
इदिनभीचफालेनभनेगौ हामालागला ब्रह्म
हामालागला बालहामालागला भनीजगदुनु

गनेललाई चक्कायको भीमलिनुपारी कोपा
तमा पोकापाती लनुको भन्ना गको मलगा ॥ ७७ ॥

भंगेत्तरको

ॐ मनागराजाः धुमरिर धुमरिः
मुकनामः पुरामाराजाजाः थोमै च्छा २१

